मानवीय करूणा की दिव्य चमक

कहानी का सार / प्रतिपाद्य

यह पाठ फादर कामिल बुल्के के जीवन पर आधारित है। इसे लेखक ने अपने संस्मरणों को आधार बनाकर लिखा है। हिन्दी भाषा के उत्थान और विकास के लिए फादर कामिल बुल्के ने अपना सर्वस्व लगा दिया। वे विदेशी थे मगर अपने कामों से उन्होंने अपने विशुद्ध भारतीय होने का प्रमाण दिया। उनका स्वभाव इतना आकर्षक और सरल था कि लोग उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। लेखक के लिए वे आत्मीयता, प्रेम और अपनेपन के कारण संबंधियों से भी बढ़कर थे।

फादर कामिल बुल्के की चारित्रिक या स्वभावगत विशेषताएँ

- विनम्र
- आत्मीय
- परिश्रमी
- परोपकारी
- सादा जीवन
- करुणा से युक्त
- वात्सल्य से युक्त
- मातृभूमि से प्रेम करने वाले

कहानी का उद्देश्य

- हमें अपने देश तथा संस्कृति से प्रेम करना चाहिए। हमारी भाषा हमारा गौरव है, हमें उसे अपनाना चाहिए।
- यह पाठ कामिल बुल्के के योगदान और कार्यों को हमारे समक्ष लाता है।

पाठ से मिलने वाला संदेश / शिक्षाएँ / प्रेरणा

- यह पाठ हमें दूसरों के लिए दयाभाव और प्रेमभाव रखने के लिए प्रेरित करता है।
- यह पाठ हमें अपने देश तथा अपनी भाषाओं का सम्मान करने की प्रेरणा देता है।
- यह पाठ हमें मानवता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है।